Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 11 | Aug. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

दलित नारी की आत्मकथा-उत्पीडन की गाथा

सुलभा वाघंबर शेंडगे

हिदी विभा , दयाांद कला महाविद्यालय, लातुर.

***सारांश* :-**

सन. १९६० के आसपास मराठी में दलित आंदोलन के उभार के साथ धीरे-धीरे दलित जीवन से जुडी रचनाओं का आना शुरु हुआ। हिंदी में १९८० तक आते-आते दलित साहित्य का सृजन होने लगा। उसमें आत्मकथा, कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता आदि विधाओं में लेखन होंने लगा। दलित जीवन की बेबाक पीडा आत्मकथा से सामने आयी। दलित समाज में स्त्री को तो दोहरे संघर्ष का सामना करना पडा है। एक दलित होने की पीडा तो दुसरी स्त्री होने की पीडा को भोगा है। दलित स्त्री लेखिकाओंने अपनी आत्मकथा में अपने दोहरे अभिशापित जीवन को आत्मकथा के माध्यम से व्यक्त किया।

***प्रस्तावना* :-**

नारी साहित्य नारी द्वारा रचित वह साहित्य है जो उसके अनुभवों की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है। ये ऐसी अनुभूतियाँ है जो अभी तक दबी हुई थी। नारी दलित होती है उसमें भी अगर वह दलित समाज से है तो उसे दोहरे संघर्ष का सामना करना पडा है।

हिंदी में दलित आत्मकथाएँ लिखी जा रही है परंतु उसमे दलित महिला लेखिकाओं की आत्मकथाएँ कम ही है। हिंदी में लिखी गयी पहली दलित महिला की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' है। उसी प्रकार सुशिला टाकभौरं की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' नारी के उत्पीडन की गाथा है। इन महिला लेखिकाओं की आत्मकथाएँ सिर्फ उनके जीवन का भोगा हुआ सत्य नही बताती है। बल्कि उनकी तरह अन्य दलित नारीयों जीवन की पीडा, अवहेलना, दर्द व्यक्त करती है-"आत्मकथा के संदर्भ में शामसुंदर घोष कहते है समय-प्रवाह के बीच तैरनेवाले व्यक्ति की कहानी है। इसमें जहाँ व्यक्ति के जीवन का जौहर प्रकट होता है वहाँ समय की प्रवृत्तीयाँ और विकृतियाँ भी स्पष्ट होती है। इन दोनों घात-प्रतिघात से ही आत्मकथा में सौदर्य और रोचकता का समावेश होता है।" भारतीय समाज में आत्मकथा यह विधा शोषित-उपेक्षितों की अभिव्यक्ति का स म माध्यम बनती चली जा रही है। आत्मकथा के संदर्भ में मॅनेजर पाण्डेय का मानना है, "दूनियाभर और हिंदी में भी आत्मकथा पीडीतो का एक ऐसा पाठ साबित हो रही है जिसके माध्यम से पीडित वर्ग और समुदाय व्यक्ति अपने जीवन की कथा कहते हुए अपने वर्ग और समुदाय की जिंदगी की वास्तविकताओं और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति करते है।" दलित आत्मकथाएँ सिर्फ अपनी पीडा और यातनाओं की कहानी

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 11 | Aug. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X Available online at www.ror.isrj.net

नही है बल्कि उस पीडा के कारणों को भी ढूँढती है और समाज के सामने सवाल खडा करती है। हमारे समाज में दलित स्त्री को लेकर अलग-अलग धारनाएँ है। अपने समाज में दलित स्त्री अपेक्षाकृत आजाद और सम्मानजनक स्थिती में है। परंतु प्रकाशित हुई दलित आत्मकथाने इस भ्रम को तोडा है। लेखिका कौशल्या बैसंत्री अपनी आत्मकथा में अपने पति के बारे में कहती है-"पत्नि को वह स्वतंत्र सेनानी भी दासी के रुप में देखना चाहता था।" कौशल्याजी अपनी आत्मकथा में कहती है कि पुरुष प्रधान संस्कृति में स्त्री का जन्म पहला अभिशाप है। तो स्त्री का दलित होना दूसरा अभिशाप है। डॉ. संजय मुनेश्वर के शब्दो में-"पुरुष जाति यहाँ से वहाँ तक एक जैसी है चाहे वह सवर्ण हो या दलित। दलित पुरुष भी अपनी स्त्री पर अन्याय अत्याचार करता है उसकी अवहेलना करता है। समता, स्वतंत्रता, न्याय की माँग करनेवाले दलित पुरुष भी अपनी स्त्री के संबंध में इन मूल्यों को याद नहीं रखते।"

'शिकंजे का दर्द' की आत्मकथाकार सुशिला टाकभौरे सास-ननंद के अंकुश और पारिवारिक जकडबंदी के कारण दलित स्त्री के उन्पीडन का तुलनात्मक अनुभव सुशिलाजी के शब्दो में-"मुझमें और मेरी नानी में फर्क म्या है? वह अशिक्षित सफाई कर्मचारी की पीडा भोगती थी मैं शिक्षित होकर भी उच्च पद आसीन होकर भी अपनी पीडा से छटपटाती हूँ, तडपती हूँ.... इस समाज व्यवस्था मे कर्णधारों से पूछना चाहती हूँ-ऐसा क्यों है? हमारी कितनी और पीढियाँ इस संताप को भोगती रहेगीं?" सुशिला टाकभौर अपनी आत्मकथा में अपनेपर हुए अन्याय को व्यक्त करती है और अन्याय के कारणों के तह तक जाने की कोशिश करती है। बरसो से चला आ रहा अन्याय का सिलसिला इस जकडन को तोडकर फेक देना चाहती है। दलित स्त्री को दोहरे शोषण और संघर्ष का सामना करना पडा है। मनुवादी पुरुष सत्ता से और मनुवादी जाति व्यवस्था से 'शिकंजे का दर्द' दलित नारी की शोषण मुक्ति की संघर्ष गाथा है, महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

दलित आत्मकथा लिखने के पीछे उनका उद्देश मनोरंजन नही है बल्कि अपने दुखद अनुभवों की अभिव्यक्ति है। मिलिंद खांडेकर की किताब 'दलित करोडपति १५ प्रेरणादायक कहानियां' लेखक हमे समाज का आईना दिखाना चाहते है। इस किताब में मिलिंद खांडेकर सच्ची घटनाओंपर प्रेर□ादायि □हा-ी लि□ी है। किताब में दलित उद्यमियों की इन कहानियों से गुजरते हुए समझ में आता है कि इन कहानियों का संघर्ष। प्रतिभा कुशवाहा के शब्दो में -"गुजरात में मशहूर सविताबेन देवजीभाई परमार ने कही। घर-घर कोयला बेचकर शुरवात करनेवाली सविताबेन आज कोयला नही बेचती है, उनकी कंपनी 'स्टर्लिंग सेरेमि□ प्राइवेट लिमिटेड' अहमदाबाद के पास फर्शपर लगानेवाली टाइल्स बनाती है इस कंपनी का सालाना टर्नओवर ५० करोड है।... पति नौकरी में इतना कमा नही पाते थे संयुक्त परिवार का भरणपोषण हो सके। इसलिए सविताबेन ने अपने कहीं भी कुछ करने का इरादा बनाया। ज्यादा पढी-लिखी नहीं थी इसलिए नौकरी नही मिल सकी, तो उन्होने सोचा क्यों न खुद का कोई काम किया जाए। उनके माता-पिता कोयला बेचने का धंदा करते थे, लिहाजा शुरुमें उनके दिमाग में कोयले से अपनी किस्मत चमकाने का विचार आया। सविताबेन कहाती है कि उन्हे दोहरी मुश्किल का सामना करना पडा। वे महिला थी और दलित भी दोनो ही कारणो से हर जगह एक अतिरिक्त पूर्वाग्रह दिखाई देता था। कोयला व्यापारी कहते-सविता बेन कल को माल को लेकर भाग गई तो हम क्या करेंगे?" आज करोडों का कारोबार सविताबेन करती है। और ऐसे ही कई कटु अनुभवों से उनका जीवन भरा है।

शुशिला टाकभौरे और कौशल्या बैसंत्री इनके जीवन में ऐसे कई कटु अनुभव आये है, उसी प्रकार से सविताबेन को भी ऐसी कई स्थितियों का सामना करना पडा है। अपनी उद्यमि जीवन में उन्हे दोहरी मुश्किलें आयी है। जहाँपर पहली दलित होना और दुसरी दलित मे स्त्री होना।

शिकंजे का दर्द एक दलित नारी की दारुन यातना की कहानी ही नही कहती उस वर्ण-व्यवस्था □ अमानविय स्वरुप के रेशे रेशे से पाठको को परिचित कराती है। चंद्रभान सिंह यादव दलित नारी के संदर्भ में कहते है-"दलित स्त्रियो के साहस के मूल में एक ओर संघर्ष से उत्पन्न शक्ति है तो दुसरी ओर व्यवस्था के प्रति विद्रोह।" दलित समाज में पुरुषो की शिक्षा न्युनतम थी वहॉ स्त्रियों की शिक्षा की तरफ किसी का ध्यान जाता ही नही था। सुशिला टाकभौरे की पढाई की लडाई उनकी माँ लडती है। उन्ही के शब्दों में-"मेरी पढाई

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 11 | Aug. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X Available online at www.ror.isrj.net

 लिए माँ ने मुझे विशेष सहयोग दिया। उन्होने मनोयोग से चाहा, मैं विशेष योग्यता हासिल करुँ ताकि अच्छी नौकरी कर सकूँ। १९६० में माँ का इस तरह सोचना उनका प्रगति परिवर्तनवादी दृष्टिकोन था।" दलित नारी का जीवन दर्दभरी पीडा से भरा हुआ है।

नि ष र्ष:

दलित नारी को समाज में अपने-आपको प्रस्थापित करने के लिए दोहरे संघर्ष का सामना करना पडा है। दलित नारी का जीवन उत्पीडन की गाथा है। आज आत्मकथाएँ यथार्थ साहित्य की एक अहम धारा बन चूकी है। दलित नारी का जीवन उपेक्षा, अत्याचार से भरा दरिया है। इनकी आत्मकथा समाज के सामने जीवन की वास्तविकता को रखती है और मनुष्य की तरह जीवन जीने की माँग करती है। अपने हक और अधिकार के लिए निरंतर संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। कठिनाई और काँटेभरे रास्ते को पार कर अप-ी मंजील तक पहूँचने की प्रेरना देती है।

संदर्भ सूचि:-

१.हिंदी का दलित आत्मकथा साहित्य - डॉ. संजय मु-ेश्वर
२.हिंदी दलित आत्मकथाएँ : एक अनुशीलन - डॉ. अभय परमार
३.दोहरा अभिशाप - ीशल्या बैसंत्री
४.शिकंजे का दर्द - सुशिला टाकभौरे
५.हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ - सरजूप्रसाद मिश्र
६.हंस - मार्च २०१०
७.हंस - जून २०१४

सुलभा वाघंबर शेंडगे
हिदी विभा , दयाांद कला महाविद्यालय, लातुर.